ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 345-347
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

भारतीय लोकतन्त्र के समक्ष चुनौतियां एवं समाधान के विविध आयाम

हरकेश मीणा
सहायक आचार्य– राजनीति विज्ञान, श्रीमती नर्बदा देवी बिहानी राजकीय
स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, नोहर जिला हनुमानगढ़ (राजस्थान) भारत

Received- 16.11.2018, Revised- 19.11.2018, Accepted - 24.11.2018 E-mail: aaryvart@gmail.com

सारांश : ***राजनीतिक लोकतन्त्र तभी सफल हो सकता है जब आर्थिक व सामाजिक समानता स्थापित हो। आर्थिक समानता अर्थात समाज के प्रत्येक सदस्य को विकास की समस्त भौतिक सुविधाऐं मिले। लोगों के बीच ज्यादा आर्थिक असमानता नही हो। व्यक्ति के द्वारा व्यक्ति का शोशण नही किया जाये। अत्यधिक आर्थिक विशमता में लोकतन्त्रीय राष्ट्र का निर्माण सम्भव नहीं है। इसके साथ–साथ सामाजिक पर्यावरण ऐसा हो कि सभी व्यक्तियों को सामाजिक दृश्टि से समान माना जाये। इसके साथ न्याय में विलम्ब की स्थिति भी लोकतन्त्र के समक्ष एक चुनौती है। न्याय में विलम्ब अन्याय के समान है। इसके अलावा प्रशासनिक अधिकारी स्वयं को जनता का स्वामी मानते है जबकि लोकतन्त्र में उनको सेवाप्रदाता समझा जाता है तथा खाप पंचायत व पितृसत्तात्मक समाज ने भी लोकतन्त्र के समझ चुनौती खड़ी कर दी है। इसके अलावा अशिक्षा, गरीबी, भ्रष्टाचार, राजनीति का अपराधीकरण, सशक्त विपक्ष का अभाव और नैतिक चरित्र में गिरावट आदि ने भी लोकतन्त्र के समक्ष चुनौती पैदा की है। यदि हमें इन चुनौतियों को दूर करना है तो आर्थिक व सामाजिक समानता स्थापित करनी होगी। शिक्षा, नैतिक चरित्र का विकास तथा कुछ कानूनो का निर्माण करना होगा।***

कुंजीभूत शब्द– राजनीतिक लोकतन्त्र, आर्थिक, सामाजिक समानता, भौतिक सुविधाऐं, आर्थिक असमानता ।

अब्राहम लिंकन ने कहा है कि "लोकतन्त्र शासन का वह रूप है जिसमें जनता का जनता के द्वारा जनता के लिए शासन हैं, अब्राहम लिकंन द्वारा दी गई लोकतन्त्र की इस परिभाषा को हम देखते है तो लोकतन्त्र में कोई दोष नजर नही आता। यह वह शासन होता है जिसमें जनता के हितो की रक्षा की जाती है। शासन जनता के प्रति उत्तरदायी होता है। यह एक श्रेष्ठ शासन व्यवस्था है। किसी भी व्यवस्था में कुछ दोषो का आ जाना कोई बडी बात नही है। प्रयासों के द्वारा उन दोषों को दूर भी किया जा सकता है।

लोकतन्त्र की श्रेष्ठता सन्देह से परे है क्योंकि आज तक हमारे राजनीतिक विद्वान लोकतन्त्र से श्रेष्ठ शासन का सुझाव नही दे पाये। जे के गेलब्रेथ ने कहा है कि परिवार और सत्य सूर्य के प्रकाश और नाईट एगल की भाति लोकतन्त्र की श्रेष्ठता सन्देह से परे है। भारत की 15 वी लोकसभा के लिए सम्पन्न चुनाव के उपरान्त दुनिया भर के नेताओं ने कहा कि हम भारतीय लोकतन्त्र को सलाम करते है। ब्रिटिश सांसद कीथ बाज व बैरीगार्डिनर जैसे ब्रिटिश सांसदों ने भारतीय लोकतन्त्र की तारीफ की वही अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी कहा कि यह देश दुनिया का सबसे बडा लोकतन्त्र ही नहीं सबसे श्रेष्ठ लोकतन्त्र भी है। फिर भी वर्तमान में जब हम लोकतन्त्र की दशा देखते है तो लगता है कि इस व्यवस्था की श्रेष्ठता के समक्ष कुछ चुनौंतियां पैदा हो गई है जिनमें जातिवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता, नक्सलवाद, आतंकवाद, क्षेत्रवाद, आर्थिक असमानता, राजनीति का अपराधीकरण व भ्रष्टाचार प्रमुख रूप से शामिल है।

जातिवाद हमारे देश में विभिन्न राजनीतिक दलों के उम्मीदवारों को टिकट देने से पूर्व जाति विशेश के व्यक्ति को उस जगह से टिकट दिया जाता हैं जहां उस जाति के मतदाताओं की संख्या अधिक हों। जब चुनाव होता है तो सम्बन्धित उम्मीदवार उस क्षेत्र में चुनाव प्रचार के दौरान लोगो की जातीय भावनाओं को उकसाता है और जाति के नाम पर वोट मागंता है। ऐसे में दुसरा उम्मीदवार उस जाति के विरोध के आधार पर वोट मागंता है। इससे लोगो के बीच में विद्वेष की भावना फैलती है। उम्मीदवार जीत कर चला जाता है। लेकिन लोगों के बीच कटुता की भावना बढ जाती है। लोग उम्मीदवार को अच्छाई व कुशल कार्यकर्ता होने के नाते वोट नहीं देते बल्कि जाति के आधार पर वोट देते है।

भारत एक बहुभाषी देश है जिसमें अनके प्रकार की बोलिया बोली जाती है यदि हम स्थानीय व क्षैत्रीय भाषाओं को छोड दे तो भी भारत में प्रमुख रूप से प्रचलित भाषाओं की सख्या 18 है। चुनाव में अनेक राजनीतिक दल भाषा को चुनावी मुद्दा बनाते है। 1980 में एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में वादा किया कि उर्दु को उसके प्राचीन सामाजिक महत्व के अनुरूप उचित स्थान दिया जावेगा। किसी दल विशेष के द्वारा किसी विशेष भाषा को समर्थन देने के आधार पर तो दुसरा राजनीतिक दल उसके विरोध के आधार पर वोट मागंता है। जिससे लोकतन्त्र को आघात पहुचता है। लोग पिछले कार्यकाल में नेताओं के द्वारा किये गये कार्यों का ठीक ढग से मूल्याकंन नही कर पाते और स्थानीय मुद्दो में उलझकर रह जाते है।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

साम्प्रदायिकता– साम्प्रदायिकता लोकतन्त्र की दुश्मन है क्योंकि इसमें विधटनकारी तत्वों को बढावा मिलता है तथा मतदाता वहा अपने मत का प्रयोग नही कर पाते जहा उन्हे करना चाहिए। ऐसे में यह लोकतन्त्र के लिए घातक सिद्वहोती है। भारत में सम्प्रदाय के आधार पर भी अनेक राजनीतिक दलों का उदय हुआ। यह सम्प्रदायिक दल पंथ के आधार पर उम्मीदवार खडा करते है। लोगों की भावनाओ को भड़काया जाता है। चुनाव से पूर्व सम्प्रदाय के प्रमुख से वोट मांगने जाते है। उनके वोट मांगने का आधार कोई विकास या सामाजिक कल्याण नहीं होता बल्कि पंथ होता है और लोग उस आधार पर वोट भी देते हैं। राजनीतिक दल वोट मांगने के लिए तुष्टीकरण की नीति अपनाते है।

क्षेत्रवाद ने भी लोकतन्त्र को बडा आघात पहुचाया है। यह भी लोकतन्त्र के समक्ष बड़ी चुनौती है। इसके कारण लोगों की निष्ठा राष्ट्रीय नहीं बल्कि क्षैत्रीय हो जाती है। इस कारण लोग उस पार्टी के उम्मीदवार को चुनते है जो क्षेत्र विशेष पर ध्यान देते है। महाराष्ट्र व असम में ये भावना अति प्रबल है। वहा भूमि पुत्र की धारण के आधार पर लोगों की भावनाओं को भड़काया जाता है। महाराष्ट्र महाराष्ट्रवासियों के लिए, असम असमवासियों के लिए ऐसे नारे लगाये जाते हैं। एक क्षेत्रीय दल द्वारा इस आधार पर मुम्बई में समय समय पर लोगों को भड़काकर अशान्ति फैलाई गई है।

आर्थिक असमानता– पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि ''भुखे व्यक्ति के लिए मत का कोई मुल्य नहीं होता'' जो व्यक्ति अत्यधिक गरीब होता है वह मत के लिए नहीं बल्कि रोटी के लिए सोचता है। रोटी के लिए वह अपना मत बेच देता है और धनवान व्यक्ति उस मत को खरीद लेता है। इससे लोकतन्त्र को आघात पहुचता है। हॉब्सन ने कहा है कि धनिकों का धन और निर्धनों की निर्धनता लोकतन्त्र को भ्रष्ट कर देती है।

मजबूत विरोधी दल का अभाव– लोकतन्त्र में विरोधी दल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शासक दल की कमियों को जनता के सामने प्रकट करने व मौका मिलने पर सत्ता हथियाना विरोधी दल का प्रमुख उद्देश्य होता है। यह तभी सम्भव है जब विपक्ष मजबूत हो। वर्तमान में भारत में सशक्त और मजबूत विपक्ष का अभाव है

राजनीतिक अस्थिरता– राजनीतिक अस्थिरता भी लोकतन्त्र के लिए हानिकारक होती है। लोकतन्त्र तभी सफल होता है जब किसी एक राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत मिले तथा एक बार सत्ता पर काबिज होने के बाद नियत समय तक सरकार चलाऐं। राजनीतिक अस्थिरता के कारण कोई भी कार्य ढ़ग से पूर्ण नहीं होता तथा देश का विकास अवरूद्ध हो जाता है।

बहुदलीय प्रणाली भी लोकतन्त्र के लिए एक चुनौती बन जाती है क्योंकि राजनीतिक दलो में सहयोग का अभाव रहता है। सारे राजनीतिक दल चाहते है कि सत्ता में मुख्य भुमिका हमारी रहे इस कारण उनके बीच आपस में खीच तान चलती रहती है जो कि लोकतन्त्र के लिए घातक है।

दल बदल– दल बदल की नीति लोकतन्त्र के लिए बहुत बड़ी चुनौती है क्योंकि इसके कारण जनता अपने आप को ठगा सा महसूस करती है क्योंकि वह वोट किसी और को देती है, सरकार किसी ओर की बन जाती है। दल बदल के कारण कई बार चुनी हुई सरकार गिर जाती है। परिणामस्वरूप दुबारा चुनाव करवाने पड़ते है। चुनावों में भारी पैसा खर्च होता है। जिससे देश का आर्थिक विकास अवरूद्वहोता है।

नैतिक मूल्यों में पतन– नैतिक मूल्यों में पतन के कारण मिलावट, चोरी, कालाबाजारी होती है। नौकरशाह, नेता, उधोगपति आदि सब भ्रश्टचार को ही शिश्टाचार मानने लग जाते है जो कि लोकतन्त्र के समक्ष बहुत बड़ी चुनौती है।

राजनीतिक अपराधिकरण– एक विद्वान ने कहा है कि राजनीति दुष्टो को अतिम आश्रय स्थल होता है। लेकिन हमारे कुछ नेताओं को देखकर लगता है कि राजनीति दुष्टों का प्रथम आश्रय स्थल बन गया है। संसद व विधानसभाओं में आपराधिक छवि वालो लोगो को देखकर तो यही लगता है। संसद व विधान सभा में चप्पल जुते चलना, कुर्सिया उठा कर फैंकना, हाथापाई करना, अश्लील भाषा का प्रयोग करना, सासदों व विधायको को खरीदना , सदन में नोटों की गड्डियाँ लहराना, लोकतन्त्र के नाम पर कलंक है। आज हालात इतने बद्तर हो गये है कि कभी जो नेता लोगों को डराने धमकाने के लिए जिन बाहुबलिया का सहारा लेते थे वे ही बाहुबली संसद व विधानसभाओं में नजर आने लगे हैं। राजनीति का अपराधीकरण का अत्यधिक निन्दनीय रूप चुनाव के समय उभर कर सामने आता है। जब आपराधिक प्रवृति के लोग चुनाव में खड़े होते है तो जनता अपने आप को ठगा सा महसूस करती है। राजनीति में जाने के लिए किसी शैक्षिक योग्यता, चरित्र की आवश्यकता नहीं पड़ती जबकि छोटी सी सरकारी सेवा में जाने के लिए व्यक्ति को चरित्र प्रमाण पत्र देना पडता है।

15 वीं लोक सभा के चुनाव में जो सदस्य चुनाव जीतकर संसद में पहुँचें है उनमें से कई सांसद ऐसे हैं जिनके नाम देश के थानों में मामले दर्ज हैं। जिनमे कमोबेश सभी प्रमुख पार्टीयों के सांसद शामिल है।

इस दूषित व गन्दी राजनीति का प्रभाव छात्र राजनीति पर भी पड़ता है। राष्ट्रीय परिदृश्य की परछायी विश्वविद्यालय व महाविद्यालय के छात्र चुनाव में भी नजर आती है। छात्र संघ चुनाव में सुधार के लिए गठित जे एम लिंगदोह समिति की

रिपोर्ट में कहा गया है कि छात्र संघ चुनाव में हिंसा होती है। यह आज के छात्र परिसर की राजनीति है जहाँ कल के नेता तैयार होते हैं। 1995 में बोहरा समिति ने अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंपी जिसमें स्पष्ट स्वीकार किया है कि राजनीतिज्ञों व अपराधियों मे गठजोड है। इस गठजोड़ में सभी स्तरों पर सरकारी तन्त्र को बेबश कर दिया है।

संसद व विधान सभा के चुनाव में धनबल व भुजबल की बढती भूमिका चिन्ता का विषय है। चुनाव में बढता धनबल व भुजबल भ्रष्टाचार रूपी पौधे के लिए खाद का काम करता है। राजनीतिक अपराधिकरण को सुधारने के लिए प्रत्येक राजनीतिक दल के सदस्य को दृढ संकल्प लेना होगा कि वह किसी अपराधिक व्यक्ति को टिकट नहीं देंगे तथा स्वयं को आपराधिक तत्वों से दूर रखेगे। उन्हे किसी प्रकार संरक्षण नहीं देगें।

भ्रष्टाचार– लोकतन्त्र के समक्ष भ्रष्टाचार भी एक मुख्य चुनौती है। राजनीति में धनबल का खेल खेला जाता है। जब राजनेता निर्वाचित होते है वे उन लोगो की सहायता करते है जिन्होने उनको चुनाव जिताने में मदद की है। भ्रष्ट राजनेता जनता को मुर्ख बनाते है और अनेक अनेतिक कार्य करते रहते हैं।

भारत में भ्रष्टाचार किस हद तक फैला हुआ है। इस बात का अन्दाजा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के इस बयान से लगाया जा सकता है जिसमें उन्होने कहा है कि यदि केन्द्र गरीब की सहायता के लिए एक रूपया भेजता है तो गरीब के पास सिर्फ 15 पैसे पहुँचते हैं।

भ्रष्टाचार हमारे खुन में कैन्सर की तरह फैल गया है जिससे दुर करने के लिए कठोर उपायो की जरूरत है। जिन व्यक्तियों के उपर गम्भीर अपराधिक मामले चल रहे है उन्हे किसी भी राजनीतिक दल द्वारा उम्मीदवार नहीं बनाया जाना चाहिए। जनता को भी इतना जागरूक होना चाहिए कि वो किसी भी सूरत में भ्रष्ट व्यक्तियों को वोट न दे। हमारे नेतृत्व को इस और प्राथमिकता से ध्यान देते हुए ऐसे प्रयास करने चाहिए कि देश में से भ्रष्टाचार मिट जाये। अब भ्रष्टाचार को दूर करने का समय आ गया है। भ्रष्टाचार के खिलाफ सघंर्ष की शुरूआत जो अन्ना हजारे ने की है वो रूकनी नहीं चाहिए। हमारे पाक साफ व चरित्रवान युवाओं को आगे आकर भ्रष्टाचार के खिलाफ मोर्चा खोलना चाहिए। जो व्यक्ति भ्रष्टाचार के खिलाफ मोर्चा खोले उसको सुरक्षा देना सरकार की प्रथम जिम्मेदारी होनी चाहिए। भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण होना चाहिए। शिक्षा द्वारा आदर्श नागरिक बनाये जाने चाहिए। हमारी शिक्षा ऐसी हो जिसमें नैतिक चरित्र का निर्माण हो।

पब्लिक सर्विस डिलवरी गारंटी एक्ट भी एक सराहनीय कदम है। इससे भी भ्रष्टाचार को रोकने में मदद मिलेगी। जन लोकपाल बिल को भी ओर अधिक मजबूत बनाया जाना चाहिए। जो भी व्यक्ति भ्रष्टाचार में लिप्त पाया जाये उसे आजीवन कारावास व फाँसी तक की भी सजा होनी चाहिए ताकि इस लोकतन्त्र को सुरक्षित रखा जा सकें।

निष्कर्ष– भारतीय लोकतन्त्र को मजबूत करने के लिए आवश्यक है कि दल बदल पर रोक लगनी चाहिए तथा दल बदल करने वालो विधायक, सासद की सदस्यता तुरन्त समाप्त कर देनी चाहिए तथा ऐसे प्रयास किये जाने चाहिए कि एक सशक्त और मजबूत विपक्ष उभर कर सामने आये और उसमें उत्तरदायित्व की भावना मौजुद हो। विपक्ष ऐसा होना चाहिए कि गलत कार्यो के लिए सरकार की आलोचना करे व सही कार्य के लिए सरकार का सहयोग करें। नौकरशाही में इस भावना का विकास करना होगा कि वे जनता के स्वामी न होकर सेवक है। मतदाताओ शिक्षित होना आवश्यक है उनमें इनती राजनीतिक चेतना होनी चाहिए कि सही गलत को समझ कर हमेशा सही के पक्ष में मतदान करें। दागी व अपराध प्रवृतियों के लोगो के चुनाव लड़ने पर रोक लगा देनी चाहिए। देश में सामाजिक व आर्थिक समानता के प्रयास करने चाहिए ताकि लोकतन्त्र सुदृढ हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दूस्तान 18 मई 2009.
2. डॉ. पुखराज जैन, राजनीति विज्ञान के मूल आधार, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा।
3. इण्डिया टूडे 3 जून 2009 (स्त्रोत ऐसोसिएशन फार डेमोक्रेटिक रिसर्च, नेशनल इलेक्शन वाच)।
4. इण्डिया टूडे 27 फरवरी 2008.
5. इण्डिया टूडे 3 जून 2009.
6. राजस्थान पत्रिका, श्रीगंगानगर।
7. मानचन्द खण्डेला, भारतीय राजनीति सिद्वान्त और व्यवहार, पोइन्ट पब्लिशर्स जयपुर।
8. डॉ. आर एन त्रिवेद्वी, डॉ. एम पी राय, भारतीय सरकार एवं राजनीति, कॉलेज बुक डिपो जयपुर।
9. रामजी सिंह, राष्ट्रीयता धर्म और राजनीति, अर्जुन पब्लिशिग हाउस नई दिल्ली।
10. आर पी जोशी, आर एस आढ़ा, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पुर्नरचना के विविध आयाम, रावत पब्लिकेशन्स जयपुर।

*****